जिस घर में हरि गुणगान वो घर है स्वर्ग समान लिरिक्स

जिस घर में हरि गुणगान,
वो घर है स्वर्ग समान,
आँगन तुलसी गो सेवा,
यही मानव की पहचान।bd।

तर्ज – एक प्यार का नगमा है।

ये मानव का चोला,
हर बार नही मिलता,
उगता है सूरज जो,
वो सांझ पड़े ढलता,
जीवन का भरोसा क्या,
दोबारा मिले न मिले,
बड़े भाग्य से मौका मिला,
चलो गो सेवा करले,
गो सेवा में मन को लगा,
हो जीवन का कल्याण,
आँगन तुलसी गो सेवा,
यही मानव की पहचान।bd।

गो माता के रग रग में,
है देवो का स्थान,
गो हत्या है ब्रह्म हत्या,
ये कहते है वेद पुराण,
फिर जान बूझकर के,
क्यो गलती करे इंसान,
आँगन तुलसी गो सेवा,
यही मानव की पहचान।bd।

गर मुक्ति चाहते हो,
करो निशदिन गो सेवा,
'दिलबर' ये निश्चित है,
मिले मुक्ति का मेवा,
राजर्षि जयपाल सिंह कहे,
गो सेवा है जग में महान,
आँगन तुलसी गो सेवा,

समस्त भजनों के लिरिक्स और विडियो बिना इन्टरनेट के भी अपने मोबाइल में देखने के लिए गूगल प्ले स्टोर या एप्पल एप्प स्टोर से 'भजन डायरी एप्प' जरुर इनस्टॉल करे। वेबसाइट - https://www.bhajandiary.com

यही मानव की पहचान।bd।

जिस घर में हरि गुणगान,
वो घर है स्वर्ग समान,
आँगन तुलसी गो सेवा,
यही मानव की पहचान।bd।

गायक एवम रचनाकार – दिलीप सिंह सिसोदिया दिलबर।
नागदा जक्शन म.प्र .9907023365

समस्त भजनों के लिरिक्स और विडियो बिना इन्टरनेट के भी अपने मोबाइल में देखने के लिए गूगल प्ले स्टोर या एप्पल एप्प स्टोर से 'भजन डायरी एप्प' जरुर इनस्टॉल करे। वेबसाइट - https://www.bhajandiary.com